इमामे अहले सुन्नत की आज से
११३ साल पहले की किताब
(इस्मऊल अरबैन. फी शफाअते सैय्यदिलमहबूबिय्न.)
का हिन्दी तरजमा
शफाअते मुस्तफा
-: तसनीफ :-
आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा, (बरेली)
कुद्दसेसिर्रहु
-: तरजमा :-
मुहम्मद फारूक खाँ अशरफी रिज़वी
-: नाशिर :-
अंजुमन-ए-गौसिया रिज़वीया
मालदारपूरा, नागपूर - 18

ZEBNEWS.IN

PRESENTED BY

NAUSHAD AHMAD "ZEB" RAZVI

ALLAHABAD

(इसमऊल अरबैन. फी शफाअते सैय्यदिलमहबूबिय्न.)

का हिन्दी तरजमा

शफ़ाअते मुस्तफ़ा
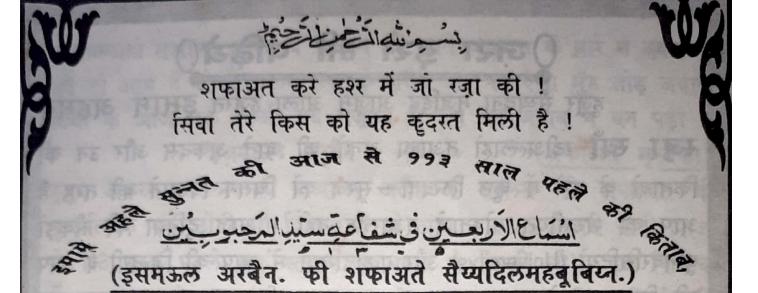
–: तसनीफ :–

"आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ बरवेली"
रदीअल्लाहो मौला तआला अन्हो

–: तरजमा :–

"मुहम्मद फारूक खाँ अशरफी रिज़वी"

नाशिर :– अंजुमन-ए-गौसिया रिज़वीया

भालदारपूरा नागपूर - 18

ज़रा इसे भी पढ़िये

हुज़ूर सैय्यदना मुजद्दिदे आज़म आला हज़रत **इमाम अहमद रज़ा खाँ** रदीअल्लाहो तआला अन्हो की ज़ाते अकदस और उन की किताबो के बारे में कुछ लिखना—सूरज को चिराग दिखाने की तरह है आप की शख्सीयत मोहताजे तआरुफ नहीं । आज दुनिया की सैकड़ो यूनिवरसिटियो (Universitys) और एकाडमियों में आप की ज़िन्दगी व आप की खिदमात के अलग अलग पहलू पर तहकीक (Research) का काम हो रहा है। आप की अज़ुमत व जलालत का अन्दाज़ा सिर्फ इस से लगाया जा सकता है कि अरब व अजम के अहले इल्म व उलमा-ए-किराम ने आप को मौजूदा सदी का मुजद्दिदे बरहक तसलीम किया है।

आला हज़रत अलैह रहमा 14 जून 1856 ईसवी को सर ज़मीने बरेली महेल्ला "जसोली" मे पैदा हुए । चार, साल की उम्र मे कुरआने करीम खत्म किया । फिर दूसरे उलूम व फुनून अपने वालिद हज़रत मौलाना नकी अली खाँ और दूसरे उलमा-ए-दीन से हासिल किये । 13 बरस की उम्र मे मुकम्मल आलिमे दीन होकर दस्तारे फज़ीलत से सरफराज़ हुए। उस के बाद अपने ज़ाती मुताल्अ (अध्ययन) से बहुत से उलूम व फुनून मे कमाल हासिल किया --- हाल ही मे नई तहकीक (Research) के मुताबिक, आप — तकरीबन 71 उलूम व फुनून पर कमाल व दसतरस (Complete Commands) रखते थे आपका विसाल 1340 हिजरी मुताबिक 1921 ईसवी को नमाज़े जुम्अ के वक्त बरेली शरीफ में हुआ । आप ने तकरीबन 1300 किताबे अपनी यादगार छोड़ी है ।

आला हज़रत की हर एक किताब अपने आप में एक कीमती खज़ाना है । छोटी से छोटी किताब में भी दलीलो के इतने अम्बार होते हैं जिसे देख कर हर पढ़ने वाला आप के इल्म की गैहराई पर हैरान रह जाता हैं। आप की हर किताब इश्के रसूल का मौजे मारता हुआ समुन्दर नज़र आती है। आप का नज़रया यह था कि मुसलमान अपने आका व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम, की मुहब्बत मे डूबे रहें ताके सही मअनो मे मुसलमान बन सके। जब भी किसी बद अकीदा ने हुज़ूर

सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की ज़ाते अकदस के बारे मे बकवास की तो आप ने अपने कलमे हक के ज़रीये उस का ऐसा मुँह तोड़ जवाब दिया के आज तक किसी बद मज़हब से उस का जवाब न बन पड़ा -

"इसमऊल अरबैन - - - - - " (शफाअते मुस्तफा)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की शफाअत के मुतअल्लिक एक छोटी सी किताब हैं जो आप ने 1305 हिजरी यानी आज से 113 साल पहले एक सवाल के जवाब मे लिखी थी। इस किताब में इमामे अहले सुन्नत आला हज़रत ने कुरआन व अहादीस की रौशनी में यह रौशन कर दिया कि बरोज़े कयामत हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम अपनी गुनाहगार उम्मत की शफाअत फरमाँएगे ।

हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम, अम्बिया व शोहदा व बुज़ुर्गाने दीन वगैरा गुनाहगारो की शफाअत फरमाएगे यह एक ऐसा अकीदा है जिस पर किसी जाहिल से जाहिल शख्स को भी कोई शक नहीं लेकिन सिवाए वहाबी, देवबन्दी जाहिलो के । यह मरदूद कुरआन व हदीस को भी मानने के लिए तैयार नहीं चुनानचे वहाबियो के बावा मौलवी "इस्माइल दहलवी" ने अपनी किताब "तकवियातुल ईमान" मे लिख मारा ------

"जो किसी को (जैसे अम्बिया, शोहदा, औलिया वगैरा को) शफाअत करने वाला समझे तो वह और अबूजहल शिर्क में बराबर है ।

(तकवीयतुल ईमान सफा नं 20)

(मआज़ अल्लाह) अल्लाह तआला इन गुमराहो से बचाऐ ।

आला हज़रत की ज़्यादा तर किताबें अरबी में हैं और कुछ फारसी या उर्दु में हैं और आज मुसलमानो का बड़ा तबका अरबी फारसी तो जाने दीजिये उर्दू से भी वाकिफ नहीं । इसलिए ज़रुरत महसूस कि जा रही थी के आला हज़रत की ज़्यादा से ज़्यादा किताबे हिन्दी में भी तरजमा करके आम कि जाए इस सिलसिले में "अन्जुमन-ए-गौसिया रिज़वीया" ने कदम उठाया ।

ज़ेरे नज़र किताब इसी मकसद की एक कड़ी है । इस से पहले भी अन्जुमन के ज़ेरे अहतेमाम आला हज़रत की "तमहीदे इमान,

निदा-ए-या रसूल—ल्लाह और नाचीज़ की करीन-ए-ज़िन्दगी वगैरा जैसी किताबे हिन्दी में मनज़रे आम पर आ चुकी है। और अब "अन्जुमन" आला हज़रत की यह तीसरी किताब "शफाअते मुस्तफा" पेश करने की सआदत हासिल कर रहा है। साथ ही मुझे यह बताते हुए निहायत ही मसर्रत हो रही हैं कि आला हज़रत का तरजमा-ए-कुरआन "कन्ज़ुल ईमान शरीफ" और "हज़रत सदरे फाज़ील मौलाना नईमुद्दीन मुरादआबादी साहब अलैह रहेमा" कि कुरआने पाक कि तफसीर "खज़ाएनुल ईरफान" हिन्दी में तरजमा हो कर जल्द ही अन्जुमन के ज़ेरे एहतेमाम छप कर मन्ज़रे आम पर आ रही है। उसके हिन्दी तरजमे का काम नाचीज़ के ही सुपुर्द किया गया है। दुआ फरमाऐ के मौला तआला इस काम को पाए तकमील तक पौहचाऐ और हमारी इस अदना सी खिदमात को कुबूल फरमाये।

!आमीन!

नाचीज़

सगे रज़ा

मुहम्मद फारूक खाँ अशरफी रिज़्वी

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इस्तिफता (सवाल)

क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन, इस मस्अले में के, नबी सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम का शफी (शफाअत करने वाला) होना किस हदीस से साबित है ?------- بَيِّنُوْا تُوْجَرُوْا.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अलजवाब

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْبَصِيْرِ السَّمِيْعِ ؕ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَى الْبَشِيْرِ الشَّفِيْعِ ؕ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ كُلَّ مَسَاءٍ وَّسَطِيْعٍ ؕ

सुबहानल्लाह ! ऐसे सवाल सुन कर कितना तअज्जुब आता हैं के मुसलमान व सुन्नियत का दावेदार और ऐसे खुले अकाएद (faiths) में शक व शुबह की आफत --- यह भी कयामत के करीब होने की अलामत है --- اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ ؕ

अहादीसे शफाअत भी ऐसी चीज़ हैं जो किसी तरह छुप सकें बीसीयो सहाबा, सदहा (कई सौ) ता बाईन, हज़ारो मुहद्देसीन, उन के रावी --- हदीस की तरह तरह की किताबे सेहह, सुनन, मुसानीद, मुआजम, जवामे, मुसन्नफात, उन से माला माल --- अहले सुन्नत का हर शख्स, यहाँ तक के औरतें व बच्चे, बल्के दैहकानी जाहिल भी इस अकीदे से आगाह --- खुदा का दीदार, मुहम्मद की शफाअत एक एक बच्चे की ज़बान पर जारी. صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ وَشَرَّفَ وَمَجَّدَ وَكَرَّمَ

फकीर — غفراللّٰه تعالیٰ — ने रिसाला (किताब) -- سَمْعٌ وَّطَاعَةٌ (समइव व तअत ले अहादीशशफाअत) मे बहुत ज़्यादा उन हदीसा को जमा व खुलासा किया [1] --- यहाँ निहायत मुख्तसर सिर्फ चालीस (40) हदीसो की तरफ इशारे और उन से पहले चन्द कुरआन की आयतो की तिलावत करता हूँ -----

[1] आला हज़रत के इस रिसाले "समइव तअत लेअहादीशशफाअत" के बारे में "हज़रत मौलाना मुहम्मद अहमद आज़मी मिसबाही किबला दामत बरकातहुमुल आलियह," लिखते है - - - (बाकी सफा नं. 6 पर)

पहली आयत :- **अल्लाह तआला** इरशाद फरमाता है ---

عَسٰۤى اَنْ یَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا۝

तरजमा :- करीब है के तेरा रब तुझे मकाम महमूद मे भेजे ![1]

"सही बुखारी शरीफ" में है-----------

"**हुज़ूर शफीऊल मुज़नेबीन** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम से पूछा गया, "मकामे महमूद" क्या चीज़ है ? फरमाया هُوَالشَّفَاعَةُ वह शफाअत है" ।

दूसरी आयत :- **अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त** इरशाद फरमाता हैं

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى۔

तरजमा :- और करीब है तुझे तेरा रब इतना देगा के तू राज़ी हो जाएगा ।[2]

"दय्लमी मुस्नदुल फिरदोस" में अमीरुल मोमेनीन **मौला आली** करमुल्लाहो तआला वजहु से रिवायत करते हैं ------

"जब यह आयत उतरी **हुज़ूर शफीऊल मुज़नेबीन** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने फरमाया- اِذًا لَّا اَرْضٰى وَوَاحِدٌ مِّنْ اُمَّتِيْ فِي النَّارِ यानी जब अल्लाह तआला मुझे राज़ी कर देने का वादा फरमाता है तो मैं राज़ी न होगा अगर मेरा एक उम्मती भी दोज़ख मे रहा -------------- اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِ۔ ------

"तिबरानी अवसत" और "बज़्ज़ार मुस्नद" में इस जनाब **मौलल मुस्लेमीन** (हज़रत मौला अली) रदीअल्लाहो तआला अन्हो से रावी, **हुज़ूर शफीउल मुज़नेबीन** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम, फरमाते हैं - - - - - - - - - -

---

(सफा नं. 5 का बाकी) आला हज़रत का यह रिसाला हमारी नज़र से नहीं गुज़रा -- गालेबन (शायद) छपा नहीं है । अन्दाज़ा हैं कि उसमें कम अज़ कम 200 अहादीसे होंगी इस अंदाज़े की बहुत सारी वजुहात है जो शफाअत की हदीसो के बहुत ज़्यादा होने में बा ख़बर और आला हज़रत की किताबों के मुतालेअ (अध्ययन) करने वाले अहले नज़र से छुपी नहीं है।

1. पारा 15 रुकू 9 सूराहे, बनी इसराईल, 2. पारा 30 रुकू 18 सूराहे "दुहा"! फारूक !

أَشْفَعُ لِأُمَّتِي حَتَّى يُنَادِيَنِي رَبِّي أَرَضِيتَ يَا مُحَمَّدُ فَأَقُولُ أَيْ رَبِّ رَضِيتُ ط

मैं अपनी उम्मत की शफाअत करूँगा - यहाँ । नक के मेरा रब पुकारेगा अए मुहम्मद तू राज़ी हुआ ? मैं अर्ज़ करुगा अए रब मेरे मैं राज़ी हुआ ।

तीसरी आयत :- **अल्लाह तआला** इरशाद फरमाता हैं ---

وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ

तरजमा :- (और अए महबूब अपने खासों और आम मुसलमान मर्दो और औरतों के गुनाहो की माफी माँगो) 1

इस आयत में अल्लाह तआला अपने हबीबे करीम अलैह अफज़लुस सलाते व तसलीम, को हुक्म देता हैं के मुसलमान मर्दो और मुसलमान औरतों के गुनाह मुझ से बख्शवाओ --- "और शफाअत काहे का नाम है "? !

चौथी आयत :- फरमाता हैं **अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त** ---

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَحِيمًا

तरजमा :- और अगर वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तेरे पास हाज़िर हो फिर खुदा से अस्तगफार करें और रसूल उन की बखशिश माँगें तो बेशक अल्लाह तआला को तौबा कुबूल करने वाला मैहरबान पाऐं । 2

इस आयत मे मुसलमानो को इरशाद फरमाता हैं के गुनाह हो जाए तो उस नबी की सरकार (दरबार) मे हाज़िर हो, और उस से दरख्वास्त (गुज़ारिश) शफाअत किया करो, महबूब (यानी हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम) तुम्हारी शफाअत फरमाऐगे तो हम यकीनन

1. पारा 26, रुकू 6 सूराहे "मुहम्मद", 19
2. पारा 5 रुकू 6 सूराहे "निसा" 64

तुम्हारे गुनाह बख़्श देंगे - ।

पांचवी आयत :- **अल्लाह तआला** इरशाद फरमाता हैं ---

قال اللہ تعالیٰ: وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ

तरजमा :- जब इन मुनाफिकों से कहाँ जाए आओ रसूलुल्लाह तुम्हारी मगफेरत मांगे तो अपने सर फेर लेते हैं। 1

इस आयत में मुनाफिको का हाले बदमाल (यानी बुरा हाल) इरशाद हुआ के वह हुज़ूर शफीऊल मुज़नेबीन सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम से शफाअत नहीं चाहते --- फिर जो आज नहीं चाहते वो कल न पाएगें --- और जो कल न पाएगें वो कुछ भी न पाएगें --- अल्लाह तआला दुनिया व आख़ेरत में उन की शफाअत से हमें बैहरा मन्द फरमाऐ

हश्र में हम भी सैर देखेगें मुनकिर आज उनसे इलतिजा न करें

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى شَفِيْعِ الْمُذْنِبِيْنَ وَاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَحِزْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ ۝

अलअहादीस (हदीसे)

शफाअते कुबरा (बड़ी शफाअत) की हदीसे जिन में साफ खुला इरशाद हुआ के मैहशर के दिनों में वह तवील (लम्बा) दिन होगा के काटे न कटे --- और सरो पर सूरज, और दोज़ख़ नज़दीक ---- उस दिन सूरज में पूरी 10 साल की गरमी जमा करेंगे और सरो से कुछ ही फ़ासले पर ला कर रखेंगे --- प्यास की वह शिद्दत के खुदा न दीखाए --- गर्मी वह कयामत की के अल्लाह बचाऐ --- बॉसों (यानी कई कई फ़िट ऊंचा) पसीना ज़मीन में जज़्ब हो कर उपर चड़ेगा, यहाँ तक के गले गले से भी ऊंचा होगा, जहाज़ छोड़े तो बहेने लगें --- लोग उसमें गोते (डूब्कीया) खाऐगे, घबरा घबरा कर दिल हलक तक आ जाएगें --- लोग इन अज़ीम (बड़ी) आफतों में जान से तंग आकर शफी (शफ़ाअत करने वाले) की तलाश में जगह जगह फिरेंगे --- आदम, व नूह व ख़लील

3 पारा 28 रूकू 13 सूरहे "मुनाफेकून" 5

(इब्राहीम) व कलीम (मूसा) व मसीह (ईसा) अलैहिस्लातो व तसलिम के पास हाज़िर हो कर (शफाअत के लिए अर्ज़ करेंगे) और जवाब साफ सुनेंगे --- सब अम्बिया फरमाऐंगे हमारा यह मरतबा नहीं, हम इस लायेक नहीं, हम से यह काम न निकलेंगा --- नफसी नफसी तुम और किसी के पास जाओ --- यहाँ तक की सब से बाद हुज़ूर पुरनूर खातेमुन नब्बीयीन सैय्यदुल अव्वालीन वल आखेरीन, शफीउल मुज़नेबीन रहमतुल आलामीन सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की खिदमत में हाज़िर होंगे --- हुज़ूरे अकदस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ------- ------- انا لها انا لها फरमायेगे, यानी मैं हूँ शफाअत के लिए --- मैं हूँ शफाअत के लिए --- फिर अपने रब्बे करीम जल्ला जलालहू की बारगाह में हाज़िर हो कर सजदा करेंगे --- उन का रब तबारक व तआला इरशाद फरमायेगा --- يا محمد ارفع رأسك وقل تسمع وسل تعط واشفع تشفع

"अए मुहम्मद अपना सर उठाओ और अर्ज़ करो तुम्हारी बात सुनी जाएगी --- और मांगो के तुम्हें अता होगा और शफाअत करो की तुम्हारी शफाअत कुबूल है"!

यही मकामे महमुद होगा जहाँ अव्वलीन (पहले के लोगो) व आखेरिन (कयामत तक के लोगों) में हुज़ूर की तारीफ व हम्द व सना का शोर पड़ जाएगा --- और मानने वाले व मुखालिफ (न मानने वाले) सब पर खुल जाएगा बारगाहे इलाही मे जो वजाहत (शान व अज़मत) हमारे आका की हैं, किसी की नहीं और मालिके अज़ीम जल्ला जलालहू के यहाँ जो अज़मत हमारे मौला के लिए हैं किसी के लिए नहीं --- والحمد لله رب العالمين इसी के लिए अल्लाह तआला अपनी खास हिकमत के मुताबिक लोगो के दिलो में ड़ालेगा के पहले और अम्बिया-ए-किराम, अलैहिमुस्सलातो व स्सलाम के पास जाए और वहाँ से महरूम फिर कर उन की खिदमत मे हाज़िर आयें ताके सब जानलें के मनसबे शफाअत (शफाअत का ओहदह) इसी सरकार (यानी हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम) के लिए ही खास है दूसरे की

शे'र — आज ले उनकी पनाह आज मदद मांग उनसे !
फिर न मानेगें कयामत में अगर मान गया !

(अज़ :- आला हज़रत)

मजाल नहीं के उस का दरवाज़ा खोल सकें । — وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن —

यह हदीसे सही बुखारी, व सही मुस्लिम, तमाम किताबो में लिखी हुई है --- और अहले इस्लाम में मअरुफ व मशहूर हैं ज़िक्र की हाजत नहीं के बहुत बड़ी हैं --- शक लाने वाला अगर दो हुर्फ (शब्द) भी पढ़ा हो तो "मिश्कात शरीफ" का उर्दू मे तरजमा मंगा कर देख ले --- या किसी मुसलमान से कहे के पढ़ कर सुना दे

और इन्हीं हदीसो के आखिर में यह भी इरशाद हुआ है के शफाअत करने के बाद हुज़ूर शफीउल मुज़नेबीन सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम, गुनाहगारो की बखशिश के लिए बार बार शफाअत फरमाएगे और हर बार अल्लाह तआला वही कलमात फरमाएंगा, और हुज़ूर हर मरतबा बे शुमार खुदा के बन्दों को निजात बख्शेगे --- मैं इन मशहुर हदीसो के सिवा एक — اَرْبَعِيْن — यानी चालीस (40) हदीसें और लिखता हूँ जो अव्वाम (लोगो) के कानो तक कम हों, जिन से मुसलमान का ईमान तरक्की पाए, मुनकिर (इन्कार करने वालो) का दिल अतिशे गैज़ (गुस्से की आग) मे जल जाए --- बिलखुसूस जिन से उस नापाक तैहरीफ (बदलाव) का रद्दे शरीफ हो जो कुछ बद दीनों, खुदा से न डरने वाले, नाहक को पसंद करने वाले, झूटे मज़हब के मानने वालो ने शफाअत के मअनी में की और इन्कारे शफाअत के गन्दे चेहरह छुपाने को एक झूटी सूरत "नाम की शफाअत" दिल से गड़ी -

इन हदीसो से ज़ाहिर होगा के हमारे आका-ए-आज़म सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम शफाअत के लिए मुकर्रर (Fix) हैं । इन्हीं की सरकार बेकस पनाह है --- उन्हीं के दर से बे यारों का निबाह है न जिस तरह एक बद मज़हब कहता है कि "जिस को चाहेगा अपने हुक्म से शफी (शफाअत करने वाला) बना देगा" [1]

यह हदीसें ज़ाहिर करेगी के हमें खुदा और रसूल ने कान खोल कर शफी (शफाअत करने वाले) का प्यारा नाम बता दिया --- और साफ फरमाया के वह "मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" है --- सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ---

1, 2, यह इबारते वहाबीयो के बड़े बावा "मौलवी इस्माइल दहलवी" ने लिखी हैं । देखिये "तकवीयतुल ईमान" ! फारूक !

न यह बात गोल रखी हो जैसे एक बद बख्त कहता है कि "उसी के इख्तेयार पर छोड़ दीजिये जिस को वह चाहे हमारा शफी कर दे" 2

यह हदीसे जान व दिल को ख़ूशी देगी के हुज़ूर की शफाअत न उस के लिए है जिस से इत्तेफाकन गुनाह हो गया हो और वह उस पर हर वक्त शरमिन्दा, व पछता रहा है व ड़र रहा है और खौफ से लरज़ रहा है --- जिस तरह एक दिल का चोर कहता है के --- "चोर पर तो चोरी साबित होगई मगर वह हमेशा का चोर नहीं और चोरी को उस ने कुछ अपना पेशा नहीं ठैहराया मगर नफ्स की शामत से कुसूर हो गया सो उस पर शरमिन्दा है और रात दिन ड़रता है"। नहीं नहीं उन के रब की कसम जिस ने उन्हें शफीऊल मुज़नेबीन किया, उन की शफाअत हम जैसे ज़लीलो, पुरगुनाहों, सियह कारो, सितमगारो के लिए है जिन का बाल बाल गुनाह मे बन्धा है, जिन के नाम से गुनाह भी अयेब व शर्म रखता है ।

تر سم آلودہ شود دامن عصیاں از من

وَحَسْبُنَا اللّٰهُ تَعَالٰی وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ۞ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَى الشَّفِيْعِ الْجَمِيْلِ ۞

وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ بِاُلُوْفِ التَّبْجِيْلِ ۞ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ —

हदीस :- ① और ② :- "इमाम अहमद बसनेद सही (सही सुबूतो के साथ) अपनी मुस्नद" मे हज़रत **अब्दुल्लाह बिन ऊमर** रदीअल्लाहो तआला अन्हुमा से, और "इब्ने माजा" हज़रत **अबूमूसा अश्अरी** से रावी **हुज़ूर शफीऊल मुज्नेबीन** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम फरमाते है ---

خُيِّرْتُ بَيْنَ الشَّفَاعَةِ وَبَيْنَ اَنْ يَّدْخُلَ شَطْرُ اُمَّتِيْ الْجَنَّةَ فَاخْتَرْتُ الشَّفَاعَةَ لِاَنَّهَا اَعَمُّ وَاَكْفٰى اَتُرَوْنَهَا لِلْمُؤْمِنِيْنَ الْمُتَّقِيْنَ؟ لَا وَلٰكِنَّهَا لِلْمُذْنِبِيْنَ الْخَطَّائِيْنَ۔

अल्लाह तआला ने मुझे इख्तेयार दिया के या तो शफाअत लो या के तुम्हारी आधी उम्मत जन्नत में जाए - मैंने शफाअत ली के वह ज़्यादा तमाम और ज़्यादा काम आने वाली है क्या तुम यह समझ लिए हो के मेरी शफाअत पाकीज़ा मुसलमानो

के लिये है, नहीं बल्कि वह उन गुनाहगारो के वास्ते है जो गुनाहो में डुबे और सख्त कार हैं -

اللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔

हदीस ③ :- "इब्ने अदी" हज़रत उम्मुल मोमेनीन **उम्मे सलमा** रदीअल्लाहो तआला अन्हा से रावी, **हुज़ूर शफीउल मुज़नेबीन** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम फरमाते हैं ---

मेरी शफाअत मेरे उन उम्मतियो के लिये है जिन्हें गुनाहो ने हलाक (बरबाद) कर ड़ाला, ——

شَفَاعَتِیْ لِلْهَالِكِيْنَ مِنْ اُمَّتِیْ۔

---- हक है अए शफी मेरे --- मैं कुरबान तेरे --- صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْكَ

हदीस ④ से ⑧ तक :- अबूदाऊद, व तिर्मीज़ी व इब्ने हिब्बान व हाकिम व बयहकी सही हदीसो के साथ हज़रत **अनस बिन मालिक** और तिर्मीज़ी व इब्ने माजा व इब्ने हिब्बान व हाकिम हज़रत **जाबिर बिन अब्दुल्लाह** और तिबरानी मुअजमे कबीर में हज़रत **अब्दुल्लाह बिन अब्बास** और खतीब बगदादी हज़रत **अब्दुल्लाह बिन ऊमर फारूक** व **कअब बिन ऊजरह** रदीअल्लाहो अन्हम से रावी **हुज़ूर शफीऊल मुज़नेबीन** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम, फरमाते हैं - - -

मेरी शफाअत मेरी उम्मत में उन के लिये है जो बड़े गुनाह वाले हैं।

شَفَاعَتِیْ لِاَهْلِ الْكَبَائِرِ مِنْ اُمَّتِیْ۔

صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْكَ وَسَلَّمَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔

हदीस ⑨ :- **अबूबकर अहमद बिन अली** बगदादी, हज़रत **अबू दरदा** रदीअल्लाहो तआला अन्हो से रावी, **हुज़ूर शफीउल मुज़नेबीन** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने फरमाया - - -

मेरी शफाअत मेरे गुनाहगार उम्मतियों के लिये है ।	شَفَاعَتِیْ لِاَهْلِ الذُّنُوْبِ مِنْ اُمَّتِیْ

अबूदरदा रदीअल्लाहो तआला अन्हो ने अर्ज़ कि - - -

अगरचा ज़िना करने वाला हो अगरचा चोर हो -	: وَاِنْ زَنٰی وَاِنْ سَرَقَ ——

----- फरमाया - - -

अगरचा ज़िना करने वाला हो अगरचा चोर हो (उस की भी मैं शफाअत फरमाऊँगा) अबूदरदा की ख्वाहिया के खिलाफ (हुज़ूर ने ऐसा फरमाया)	:— وَاِنْ زَنٰی وَاِنْ سَرَقَ عَلٰی رَغْمِ اَنْفِ اَبِی الدَّرْدَاءِ ——

हदीस (10) और (11) :- तिबरानी व बयहकी **हज़रत बुरीदह** और तिबरानी मुअजमे अवसत मे **हज़रत अनस** रदीअल्लाहो तआला अन्हो से रावी, **हुज़ूर शफीऊल मुज़नेबीन** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम फरमाते हैं

यानी तमाम ज़मीन पर जितने पेड़ (झाड़), पत्थर, ड़ेले हैं मैं कयामत में उन सब से ज़्यादा अदमियों की शफाअत फरमाऊॅगा ।	اِنِّیْ لَاَشْفَعُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ لِاَكْثَرَ مِمَّا عَلٰی وَجْهِ الْاَرْضِ مِنْ شَجَرٍ وَّحَجَرٍ وَّمَدَرٍ۔

हदीस (12) :- बुखारी, मुस्लिम, हाकिम, बयहकी **हज़रत अबूहुरैरा** रदीअल्लाहो तआला अन्हो से रावी, **हुज़ूर शफीउलमुज़नेबीन** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम फरमाते हैं -—— وَاللَّفْظُ لِهٰذَيْنِ

मेरी शफाअत हर कल्मा पढ़ने वाले के लिये है जो सच्चे दिल से कल्मा पढ़े और ज़बान की तसदीक दिल करता हो ।	شَفَاعَتِیْ لِمَنْ شَهِدَ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُخْلِصًا يُّصَدِّقُ لِسَانَهٗ قَلْبُهٗ۔

हदीस (13) :- अहमद तिबरानी व बज़्ज़ार हज़रत **मआज़ बिन जबल,** व हज़रत **अबूमूसा अश्अरी** रदीअल्लाहो तआला अन्हुमा से रावी **हुज़ूर शफीऊलमुज़नेबीन** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम फरमाते हैं ---

إِنَّهَا أَوْسَعُ لَهُمْ هِيَ لِمَنْ مَاتَ وَلَا يُشْرِكُ بِاللّٰهِ شَيْئًا.

शफाअत में उम्मत के लिये ज़्यादा फायदा है के वह हर शख्स के वासते है जिस का खातमा ईमान पर हो --

हदीस (14) :- तिबरानी मुअजमे अवसत में हज़रत **अबूहुरैरह** रदीअल्लाहो तआला अन्हो से रावी --- **हुज़ूर शफीऊलमुज़नेबीन** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम, फरमाते हैं - -

آتِي جَهَنَّمَ فَأَضْرِبُ بَابَهَا فَيُفْتَحُ لِي فَأَدْخُلُهَا فَأَحْمَدُ اللّٰهَ مَحَامِدَ مَا حَمِدَهُ أَحَدٌ قَبْلِي مِثْلَهُ وَلَا يَحْمَدُهُ أَحَدٌ بَعْدِي مِثْلَهُ ثُمَّ أُخْرِجُ مِنْهَا مَنْ قَالَ "لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ" مُخْلِصًا.

मैं जहन्नम का दरवाज़ा खुलवा कर तशरीफ ले जाऊँगा वहाँ खुदा की तअरीफें करूँगा ऐसी के न मुझ से पहले किसी ने की --- न मेरे बाद कोई करे --- फिर दोज़ख से हर उस शख्स को निकाल लूँगा जिसने खालिस दिल से कहा --- "لا إله إلا الله"

हदीस 15 :- "हाकिम" सही हदीस के साथ, और "तिबरानी" व "बयहकी" हज़रत **अब्दुल्लाह बिन अब्बास** रदीअल्लाहो तआला अन्हो से रावी **हुज़ूर शफीऊलमुज़नेबीन** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम फरमाते हैं ---

يُوضَعُ لِلْأَنْبِيَاءِ مَنَابِرُ مِنْ ذَهَبٍ فَيَجْلِسُونَ عَلَيْهَا وَيَبْقَى مِنْبَرِي وَلَمْ أَجْلِسْ لَا أَزَالُ أُقِيمُ خَشْيَةَ أَنْ أُدْخَلَ الْجَنَّةَ وَيَبْقَى أُمَّتِي بَعْدِي فَأَقُولُ يَا رَبِّ أُمَّتِي أُمَّتِي. فَيَقُولُ اللّٰهُ يَا مُحَمَّدُ وَمَا تُرِيدُ أَنْ أَصْنَعَ بِأُمَّتِكَ؟ فَأَقُولُ يَا رَبِّ عَجِّلْ حِسَابَهُمْ فَمَا أَزَالُ حَتَّى أُعْطَى — وَقَدْ بُعِثَ بِهِمْ إِلَى النَّارِ وَحَتَّى أَنَّ مَالِكًا

خَازِنَ النَّارِ يَقُوْلُ يَا مُحَمَّدُ مَا تَرَكْتَ بِغَضَبِ رَبِّكَ فِيْ أُمَّتِكَ مِنْ بَقِيَّةٍ -

अम्बिया के लिये सोने के मिम्बर (तख्त) बिछाए जाएगे वह उन पर बैठेंगे और मेरा मिम्बर (तख्त) बाकी रहेगा मैं उस पर न बैठूगा बल्कि अपने रब के हूज़ूर सीधा खड़ा रहुगा इस ड़र से के कहीं ऐसा न हो के मुझे जन्नत में भेज दे और मेरी उम्मत मेरे बाद रह जाए—फिर अर्ज़ करूँगा अए रब मेरे, मेरी उम्मत --- मेरी उम्मत --- अल्लाह तआला फरमाएगा "अए मुहम्मद तेरी क्या मरज़ी है मैं तेरी उम्मत के साथ क्या करूँ"? अर्ज़ करुगा अए रब मेरे उन का हिसाब जल्द फरमा दे --- फिर मैं शफाअत करता रहूँगा यहाँ तक के मुझे उन की रिहाई की चिठ्ठीयाँ मिलेंगी जिन्हें दोज़ख भेज चुके थे यहाँ तक के "मालिक" दोज़ख का दरोगा अर्ज़ करेगा - अए मुहम्मद (सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम) आप ने अपनी उम्मत में रब का गज़ब नाम को न छोड़ा ---

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ -

हदीस (16) से (21) तक :- बुखारी व मुस्लिम व निसाई हज़रत **जाबिर बिन अब्दुल्लाह** और "अहमद" सही सनद के साथ, और बुखारी तारीख में - और बज़्ज़ार, तिबरानी, व बयहकी व अबू नईम हज़रत **अब्दुल्लाह बिन अब्बास** --- और "अहमद" बसनदे हसन व बज़्ज़ार बसनदे जीद व दारमी व इब्ने शीबा व अबू यअला व अबू नईम व बयहकी हज़रत **अबूज़र** --- और तिबरानी मुअजमे अवसत मे हज़रत **अबूसईद खुदरी** की सनद के साथ और कबीर मे हज़रत **साएब बिन यज़ीद** और अहमद बहुत सारी सही रिवायतो के साथ और इब्ने शीबा व तिबरानी हज़रत **अबूमूसा अश्अरी** रदीअल्लाहो तआला अन्हम से रावी (रिवायत करते हैं) ---

इन छेओ (6) हदीसो में यह बयान हुआ के हुज़ूर शफीउल मुज़नेबीन सल्लल्लाहो तआला अलैह

وَاللَّفْظُ لِجَابِرٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ

صلى الله تعالى عليه وسلم واعطيت ما لم يعطهن احد قبلي (الى قوله صلى الله تعالى عليه وسلم) واعطيت الشفاعة۔

व सल्लम फरमाते हैं मैं शफी (शफाअत करने वाला) मुकर्रर कर दिया गया और शफाअत ख़ास मुझी को अता होगी मेरे सिवा किसी नबी को यह मनसब न मिला ।

हदीस (22)(23) :- इब्ने अब्बास, व **अबूसईद,** व **अबूमूसा अश्अरी,** से इन्हीं हदीसो में वह मज़मून भी है जो अहमद व बुख़ारी व मुस्लिम ने **अनस** और **शेख़ैन**[1] ने **अबूहुरैरा** से रिवायत किया रदीअल्लाहो तआला अन्हम अजमईन, के **हुज़ूर शफीऊलमुज़नेबीन** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम फरमाते हैं ---

ان لكل نبي دعوة قد دعا بها في امته واستجيب له (وهذا اللفظ لانس ولفظ ابي سعيد) ليس من نبي الا وقد اعطى دعوة فتعجلها (ولفظ ابن عباس) لم يبق نبي الا اعطي له (رجعنا الى لفظ انس و الفاظ الباقين كمثله معنى) قال واني اختبأت دعوتي شفاعة لامتي يوم القيمة (زاد ابو موسى) جعلتها لمن مات من امتي لا يشرك بالله شيئا۔

यानी अम्बिया अलैहिमुस सलातो व स्सलाम की अगरचा हज़ारो दुआऐं कुबूल होती हैं मगर एक दुआ उन्हें ख़ास जनाबे बारी तबारक व तआला से मिलती है के जो चाहो मॉग लो, बेशक दिया जाएगा --- तमाम अम्बिया, आदम से ईसा तक अलैहिमुस्सलातो व स्सलाम, सब अपनी अपनी वह दुआ दुनिया में कर चुके और मैंने आख़ेरत के लिये उठा रखी है -- वह मेरी शफाअत है मेरी उम्मत के लिये -- कयामत के दिन मैं ने उसे अपनी सारी उम्मत के लिये रख़ा है जो ईमान पर दुनिया से उठी --

اللهم ارزقنا بجاهه عندك آمين अल्लाहो अकबर ! अए उम्मत के गुनाहगारो ! क्या तुम ने अपने मालिक व मौला सल्लल्लाहो तआला अलैह व

---

1. हज़रत सिद्दीके अकबर और हज़रत फारुके आज़म रदीअल्लाहो तआला अन्हुमा, को शेख़ैन कहा जाता है । ! फारुक !

सल्लम की यह मैहरबानी व रहमत अपने हाल पर न देखी ? के बारगाहे इलाही अज्ज़ा जल्लालहु से तीन सवाल हुज़ूर को मिले जो चाहो माँग लो --- अता होंगा --- हुज़ूर ने उन में कोई सवाल अपनी ज़ाते पाक के लिये न रखा - सब तुम्हारे ही काम मे सर्फ (पूरे) फरमा दे - दो सवाल दुनिया में किये वह भी तुम्हारे ही वासते --- तीसरा आख़ेरत को उठा रखा वह तुम्हारी उस अज़ीम हाजत (सब से बड़ी ज़रूरत) के वासते जब इस मैहरबान मौला, रऊफ व रहीम आका --- सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के सिवा कोई काम आने वाला, बिगड़ी बनाने वाला न होगा --- सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ---

हक फरमाया --- **हज़रते हक (अल्लाह)** अज़्ज़ व जल्ला ने

عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ
عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ

तरजमा :- (जिन पर तुम्हारा मुशक्कत में पड़ना गिराँ है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले मुसलमानों ! पर कमाल मैहरबान, मैहरबान) ١ــ

वलिल्लहिलअज़ीम ! कसम उस की जिस ने उन्हें हम पर मैहरबान किया के हरगिज़ हरगिज़ कोई माँ अपने अज़ीज़ प्यारे इकलवते बेटे पर हरगिज़ इतनी मैहरबान नहीं जिस कदर वह अपने एक उम्मती पर मैहरबान हैं ----- صلى الله تعالىٰ عليه وسلم۔

इलाही ! तू हमारी इन्केसारी व कमज़ोरी और उन के अज़ीम अज़ीम हुकूक की अज़मत जानता है, अए कादिर ! अए वाजिद ! अए माजिद ! हमारी तरफ से उन पर और उन की आल पर वह बरकत वाली दुरूदें नाज़िल फरमा जो उन के हुकूक को वाफी (पूरी) हो और उन की रहमतो को मुकाफी (बदला) --

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ قَدْرَ رَاْفَتِهٖ وَرَحْمَتِهٖ
بِاُمَّتِهٖ وَقَدْرَ رَاْفَتِكَ وَرَحْمَتِكَ بِهٖ اٰمِيْنَ اٰمِيْنَ اِلٰهَ الْحَقِّ اٰمِيْنَ ــــــــ

सुबहानल्लाह ! उम्मतियों ने उन की रहमतो का यह मआवज़ा (बदला) रखा कि कोई अफज़लियत मे बराबरी निकालता है -- कोई उन की

---

1 पारा 11 रूकू 5 सूरहे तोबा, ! फारुक !

शफअत में शक डालता है, कोई उन की तअरीफ अपनी सी जानता हैं कोई उनकी तअज़ीम पर बिगड़ कर किर्राता है --- अफआले मुहब्बत का बिदअत नाम (यानी हुज़ूर की मुहब्बत में कोई काम करे तो कोई उसे बिदअत कहता है) --- उनकी बुज़ुर्गी व अदब करने वाले पर कोई शिर्क का हुक्म लगाता है --- —— إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ ——

وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

हदीस (24) :- सही मुस्लिम में हज़रत **ऊबय्यी बिन कअब** रदीअल्लाहो तआला अन्हो से मरवी (रिवायत हैं) **हुज़ूर शफीउल मुज़नेबीन** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम फरमाते हैं ----

"अल्लाह तआला ने मुझे तीन सवाल अता फरमाए -- मैंने दो तो दुनिया मे अर्ज़ करली (मॉग लिये) -----

(पहली दुआ) इलाही मेरी उम्मत की मगफरेत फरमा (दूसरी दुआ) इलाही मेरी उम्मत की मगफरेत फरमा --- और तीसरी दुआ उस दिन के लिये उठा रखी है जिस में तमाम मखलूके इलाही मेरी तरफ नियाज़मन्द (हाजतमन्द) होगी यहाँ तक के इब्राहीम खलीलुल्लाह अलैहिस्सलातो व स्सलाम (भी)

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِأُمَّتِيْ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِأُمَّتِيْ -
وَأَخَّرْتُ الثَّالِثَةَ لِيَوْمٍ يَّرْغَبُ ——
إِلَيَّ فِيْهِ الْخَلْقُ حَتّٰى إِبْرَاهِيْمُ ——|

—— وَصَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ——

हदीस (25) :- "बयहकी" हज़रत **अबूहुरैरा** रदीअल्लाहो तआला अन्हो से रावी (रिवायत करते है) **हुज़ूर शफीउलमुज़मेबीन** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने शबे असरा (शबे मैराज) अपने रब से अर्ज़ कि तू ने अम्बिया अलैहिमुस्सलातो व स्सलाम को यह फज़ाएल (फज़ीलते) बख्शे, रब अज़्ज़ा मजदहु (यानी अल्लाह तआला) ने फरमाया

मैंने तुझे अता फरमाया वह उन सब से बेहतर है मैंने तेरे लिये शफाअत

أَعْطَيْتُكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ (الى قوله) خَبَأْتُ

छुपा रखी और तेरे सिवा दूसरे को न दी ।

شَفَاعَتَكَ وَلَمْ أُخَبِّأْهَا لِنَبِيٍّ غَيْرِكَ۔

हदीस (26) :- इब्ने अबी शीबा व तिर्मीज़ी सही हदीस के साथ और इब्ने माजा व हाकिम हदीस को परख कर हज़रत **ऊबय्यी बिन कअब** रदीअल्लाहो तआला अन्हो से रावी **हुज़ूर शफीउलमुज़्नेबीन** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम फरमाते हैं ------

कयामत के दिन मैं अम्बिया का पेशवा (सरदार) और खतीब (उन की तरफ से कहने वाला) और उन का शफाअत वाला रहूँगा और यह कुछ फख्र के रास्ते से नहीं फरमाता --

وَإِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ كُنْتُ إِمَامَ النَّبِيِّيْنَ وَخَطِيْبَهُمْ وَصَاحِبَ شَفَاعَتِهِمْ غَيْرَ فَخْرٍ۔

हदीस (27) से (40) तक :- "इब्ने मनअे" हज़रत **ज़ैद बिन अरकम** वगैरा चौदाह (14) सहाबा-ए-किराम, रदीअल्लाहो तआला अन्हम से रावी (रिवायत करते हैं) **हज़रत शफीऊलमुज़्नेबीन** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम फरमाते हैं - - -

मेरी शफाअत रोज़े कयामत हक है जो उस पर ईमान न लाएगा उस के (यानी शफाअत) के काबिल न रहेगा ।

شَفَاعَتِيْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حَقٌّ فَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِهَا لَمْ يَكُنْ مِّنْ أَهْلِهَا۔

मुनकिर मिसकिन (इन्कार करने वाले संजीदा) इस हदीसे मुतवातिर (लगातार बहुत सारी हदीसो) को देखे अपनी जान पर रहेम करके शफाअते मुस्तफा सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम पर ईमान लाए --- اَللّٰهُمَّ إِنَّكَ تَعْلَمُ أَنَّكَ هَدَيْتَ فَآمَنَّا بِشَفَاعَةِ حَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ــــ فَاجْعَلْنَا مِنْ أَهْلِهَا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ؞ يَا أَهْلَ التَّقْوٰى وَأَهْلَ الْمَغْفِرَةِ ؞ وَاجْعَلْ أَشْرَفَ صَلَوَاتِكَ ؞ وَأَنْمٰى بَرَكَاتِكَ ؞ وَأَزْكٰى تَحِيَّاتِكَ ؞ عَلٰى هٰذَا الْحَبِيْبِ الْمُجْتَبٰى وَالشَّفِيْعِ الْمُرْتَجٰى ؞ وَعَلٰى آلِهِ وَصَحْبِهِ دَائِمًا أَبَدًا ــ آمِيْن آمِيْن يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ۔

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

दुआए रज़ा

अज़ :- आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रदीअल्लाहो तआला अन्हो

या इलाही हर जगह तेरी अता का साथ हो
जब पड़े मुशकिल शहे मुशकिल कुशा का साथ हो

या इलाही भूल जाऊँ नज़अ की तकलीफ़ को
शादीए दीदारे हुस्ने मुस्तफ़ा का साथ हो

या इलाही जब ज़बाने बाहर आयें प्यास से
साहेबे कौसर शहे जूदो अता का साथ हो

या इलाही गरमीए मैहशर से जब भड़के बदन
दामने महबूब की ठण्डी हवा का साथ हो

या इलाही नामाऐ आमाल जब खुलने लगे
ऐब पोशे खल्के सत्तारे खता का साथ हो

या इलाही जब बहे आँखे हिसाबे जुर्म में
उन तबस्सुम रेज़ होटों की दुआ का साथ हो

या इलाही रंग लाये जब मेरी बेबाकियाँ
उन की नीची नीची नज़रो की हया का साथ हो

या इलाही जब चलू तारीक राहे पूलसिरात
आफताबे हाशमी नुरूल हुदा का साथ हो

या इलाही जब सरे शम्शीर पर चलना पड़े
रब्बे सल्लीम कहने वाले गम जुदा का साथ हो

या इलाही जो दुआऐं नेक मैं तुझ से करूँ
कुदसीयों के लब से आमीन रब्बना का साथ हो

या इलाही जब रज़ा ख्वाबे गिराँ से सर उठायें
दौलते बेदारे इश्के मुस्तफा का साथ हो